ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

भारतीय संगीत का आध्यात्मिक पक्ष

The spiritual Side of Indian Music

Paper Submission: 12/12/2020, Date of Acceptance: 24/12/2020, Date of Publication: 25/12/2020

मनीष डंगवाल
प्रभारी एवं सहायक प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
रा.स्ना. महाविद्यालय,
गोपेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारतीय संगीत का संचालन समाधि की ओर होता है। पाश्चात्य संगीत सुनने से मन उत्तेजित होता है परन्तु भारतीय संगीत हमें ईश्वर से एकाकारिता कराता हैं। भारतीय संगीत, शास्त्र भी है व कला भी। भारतीय संगीत, शास्त्र का आधार है। योगशास्त्र जो कि समस्त भारतीय शास्त्र कलाओं को "मूल आधार" मान्य है। अतः योगशास्त्र के अनुभवों की ओर ले जाना भारतीय संगीत का एक मात्र लक्ष्य है।

संगीत व योग की परस्पर घनिष्टता सदा से ही रही हैं। चाहें वह किसी भी रूप में हो एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नही की जा सकती। दोनों का लक्ष्य व उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार द्वारा आत्मा–परमात्मा के मिलन की "परमानन्द–अवस्था" को प्राप्त करना रहा है।

Indian music operates towards the Samadhi. Hearing western music stimulates the mind, but Indian music makes us monopolize with God. There is also Indian music, scripture and art. Indian music is the basis of scripture. Yogasastra, which is the "basic foundation" of all Indian scriptural arts, is valid. Hence, the only goal of Indian music is to move towards the experiences of Yogasastra.

Music and yoga have always been close. Whether it is in any form, one cannot be imagined without the other. The goal and objective of both has been to achieve the "ecstasy-state" of union of soul and God through self-realization.

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, लक्ष्य, ब्रह्म, आध्यात्म, नादब्रह्म, मोक्ष, मार्गी संगीत।
Classical Music, Lakshya, Brahman, Spirituality, Nadabrahma, Moksha, Margie Music.

प्रस्तावना

मानव जीवन का चरम लक्ष्य परमात्मा का साक्षात्कार माना गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति का सर्वोत्तम माध्यम संगीत होने के कारण इसे आध्यात्म के रंग में पूरी तरह रंगने का प्रयत्न किया गया है। भारत धर्म प्रधान देश हैं भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भूमि पर प्रवाहित होती रही है तथा उसका प्रयोजन लोक कल्याण रहा है।

संगीत एवं योग

सम्पूर्ण संसार अप्रत्यक्ष रूप से संगीतमय हैं संगीत एक ईश्वरीय वाणी है अतः यह ब्रह्म रूप ही हैं संगीत आनन्द का अविर्भाव है तथा आनन्द ईश्वर का स्वरूप है। संगीत के माध्यम से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। योग व ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ आचार्य श्री याज्ञवल्क्य जी कहते हैं–

वीणावादनतत्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः।
तालश्रह्लाप्रयासेन मोक्षमार्ग च गच्छति।। [1]

संगीत एक प्रकार का योग है इसकी विशेषता है कि इसमें साध्य और साधन दोनों ही सुखरूप हैं। अतः संगीत एक उपासना है, इस कला के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति होती है। यही कारण है कि भारतीय संगीत के सुर और लय की सहायता से मीरा, तुलसी, सूर और कबीर जैसे कवियों ने भक्त शिरोमणि की उपाधि प्राप्त की और अन्त में ब्रह्म के आनन्द में लीन हो गए इसीलिए संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग बताया गया है।

भारतीय संस्कृति आध्यात्म प्रधान मानी जाती रही है। संगीत से आध्यात्म तथा मोक्ष की प्रप्ति के साथ भारतीय संगीत के प्राण भूत तत्व रागों के द्वारा मनः शांति, योग ध्यान, मानसिक रोगों की चिकित्सा आदि विशेष लाभ प्राप्त होते है।

मार्गी संगीत

प्राचीन मनीषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति नाद से मानी है ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण जड़–चेतन में नाद व्याप्त है इसी कारण इसे "नाद– ब्रह्म" भी कहते हैं।

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतवायदक्षरम्।
विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतोयतः।। 2

अर्थात् शब्द रूपी ब्रह्म अनादि, विनाश रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रक्रिया से ही यह जगत भासित होता है।

संगीत में मन को एकाग्र करने की एक अत्यन्त प्रभावशाली शक्ति है तभी से ऋषि मुनि इस कला का प्रयोग परमेश्वर का आराधना के लिए करने लगे। "'ऊँ' शब्द ही ब्रह्म है ऐसा मानकर उन्होंने इसे कड़े नियमों में बांधने का प्रयत्न किया। भरतमुनि ने इस नियमबद्ध संगीत को, जिसे ईश्वर प्राप्ति का साधन माना गया "मार्गी संगीत" कहकर पुकारा। संगीत दर्पण के लेखक दामोदर पन्डित जी के अनुसार –

द्रहिणेत यदन्विष्टं प्रयुक्तं भरतेन च।
महादेवस्य पुरस्तन्मार्गारण्य विमुक्तदम्।। [3]

अर्थात् ब्रह्माजी ने जिस संगीत को शोध करके निकाला तथा भरत मुनि ने महादेवजी के सामने जिसका प्रयोग किया और जो मुक्ति दायक है 'मार्गी संगीत' कहलाता हैं।

संगीत रत्नाकर के लेखक शारंगदेव जी के अनुसार –

मार्गो देशीति तद् द्वेधा तत्र मार्गः स उच्यते।
यो मार्गितो विरिञ्चाद्यैः प्रयुक्तो भरतादिभिः।।

इस श्लोक के अनुसार "मार्ग संगीत" वह है जिसका प्रयोग ब्रह्माजी के बाद भरत ने किया। वह संगीत अत्यन्त प्राचीन तथा कठोर सांस्कृतिक व धार्मिक नियमों से जकड़ा हुआ था। अतः आगे उसका प्रचार–प्रसार समाप्त हो गया।

प्राचीन आचार्यों के अनुसार –

ओंकार, बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।

अर्थात् ऊंकार बिन्दु संयुक्त है। बिन्दु सृष्टि का परमरहस्य है। योगी इस बिंदुसंयुक्त ओंकार का नित्यमेव ध्यान करते हैं तथा काम व मोक्ष दोनों की प्राप्ति ओंकार से सम्भव है ऐसा मानते है।

'ऊँ' अथवा 'ऊंकार' को नाद–ब्रह्म का सर्वोच्चगुण माना गया है। भारतीय वाङ्मय में यह विलक्षण शब्द है तथा इसे "तस्य वाचकः प्रणवः" – अर्थात् परमात्मा का वाचक पद माना गया है।

न नादेन बिना गीतं न नादेन बिना स्वराः।
न नादेन बिना ज्ञानं न नादेन बिना शिवाः।। [4]

अर्थात् न तो नाद के बिना स्वर की उत्पत्ति हो सकती है, न ही नाद के बिना गीत उत्पन्न हो सकता है, न नाद के बिना ज्ञान प्राप्त हो सकता है और ना ही नाद के बिना कल्याण हो सकता है।

नाद आध्यात्मिक पक्ष

प्राचीन मनीषियों द्वारा आध्यात्म सम्बन्धी साहित्य में समन्वित सामग्री स्वमेव यह प्रमाण देती है कि भारतीय संगीत सदा आध्यात्म की गोद में ही पल्लवित हुआ है। ऋग्वेद व सामवेद में यज्ञों के उद्देश्य से प्रयुक्त 'संगीत' देवताओं की अराधना के लिये तथा परमतत्व के अनुसंधान व आवाहन के लिये ही प्रयुक्त किया गया।

मन को ब्रह्म चिन्तन की ओर लगाने व उसी से एकाकार करने में "नाद" सर्वोपरी माना गया है। नाद की इसी अलौकिक सत्ता का अनुभव करते हुए कहा गया है–

चैतन्यं सर्वभूतानां विवृतं जगदात्मना
नाद–ब्रह्म तदानन्द मद्वितीयमपास्महे।
नादोपासनया देवा ब्रह्म विष्णु महेश्वराः
भवन्त्युपासिना नूनं यस्मादेते तदात्मकाः।। [5]

अर्थात् संगीत का आधरभूत तत्व नाद सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है, सृष्टि का कारण है इसीलिये नाद को 'नादब्रह्म' कहकर उपास्य तत्व व उपासना का साधन स्वीकार किया गया है। इससे साधक को इह लोक व परलोक की प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति हो जाती थी। संगीत साधना शान्तिमय वातावरण में जीवन व्यतीत करने का सबसे सरल उपाय माना जाता था"।

संगीत का ज्ञान न होने पर शरीर व कन्ठ की सुन्दरता तथ चित्त की एकाग्रता मात्र के अभ्यास या साधना का लक्ष्य पूर्ण नही होता। अतः गुरू मुख से प्राप्त ज्ञान जिस प्रकार एक योगी के लिये आवश्यक है उसी प्रकार एक कला साधक के लिये भी आवश्यक है बल्कि अनिवार्य हैं। गुरू से प्राप्त ज्ञान स्वप्रतिभा साधना के माध्यम से कलात्मक अस्वादनीयता का दिव्यात्मक आनन्द में परिवर्तन, तन्मयता के कारण नैतिक उत्थान होने पर आत्मा का सांसारिक विषय बोध से हटकर "नादब्रह्म" में विलीन होने जैसी स्थिति का अर्विभाव अर्थात् सविकल्प समाधि और आत्मज्योति के प्रकाश से प्रकाशित कला, यह सभी संगीत कला के आध्यात्मिक पक्ष की सहृदयता को प्रमाणित करते है। संगीत रत्नाकर में कहा गया है–

तस्य गीतस्य महाऽऽत्म्यं के प्रशंसितुमीशते।
धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैकसाधनम्।। [6]

संगीत का आधारभूत तत्व "नाद" आत्मचेतना की जागृति के लिये स्वर साधना द्वारा उत्पन्न आकर्षण से परिपुष्ट होता है। स्थूलरूप धारण कर सूक्ष्मरूप में अनुभव जन्य बनता है और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से चित्तवृत्ति का विरोध करता है।

शोध प्राविधि

पुस्तकों एवं ग्रन्थों का पठन, वार्त्ता द्वारा, शोध पत्रों का अध्ययन।

निष्कर्ष

प्राचीन समय से मानव संगीत की आध्यात्मिक एवं मोहक शक्ति से प्रभावित होता आया है। भारत में संगीत का धर्म एवं आध्यात्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। "वैदिक काल में संगीत कला मोक्ष प्राप्ति के ध्येय से अपनाकर साधना करते थे। संगीत एक यौगिक विद्या है जिसकी तीव्र एवं तीव्रतर ध्वनियां मनुष्य के सूक्ष्म स्नायुओं को झंकृत कर सुषुप्त कुण्डलिनियों को जागृत कर देती हैं तथा मानव आत्मा को आत्मोन्नति की चरम सीमा, "मोक्ष" के द्वार तक पहुंचा देती है – जो भारतीय दर्शन का अन्तिम लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यलय हाथरस, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या – 123*
2. *भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ0 सुनीता शर्मा, पृष्ठ– 44*
3. *संगीत दर्पण ,प्रथम स्वराध्याय, श्लोक संख्या –4, पृष्ठ संख्या – 2*
4. *वृहददेशी, भाग एक, श्लोक सं. – 18, 19, पृष्ठ संख्या – 8*
5. *ज्योतिष एवं रोग चिकित्सा पद्धति*
6. *संगीत रत्नाकर, भाग एक, श्लोक सं. – 1, 2, पृष्ठ संख्या – 108*